* पुरातन *

प्राक्कथन

कबीर मध्यकाल के श्रेष्ठ कवि हैं। हिंदी साहित्य में कबीर का स्थान सबसे ऊँचा हैं। कबीर ने अपने युग को बहुत निकट से देखा और समझा था। कबीर ने सभी रुढियों, आडम्बरों और पाखण्डों का खुलकर विरोध किया था। वे पूर्ण सत्य का साक्षात्कार करनेवाले अत्यन्त संवेदनाशील, सरलहृदय के संत कवि थे। कबीर ने जो कुछ कहा है वह सत्य पर आधारित है ।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य का अध्ययन करते समय मेरा मन हिंदी संत साहित्य की ओर सबसे अधिक आकर्षित हुआ। हिंदी साहित्य के नभांगण को अपने काव्य से आलोकित करनेवाले एक चमकते सितारे की ओर मैं अपने आप अत्याधिक आकर्षित हुआ, जिसके काव्य में सूर्य - प्रकाश जैसी स्पष्टता, प्रखरता, चन्द्र - प्रकाश जैसी मन - मोहकता और शुक्र के तारे जैसी आल्हाददायकता मैंने अनुभव की। उस संत, भक्त कवि का नाम है कबीर। उस पर विशेष अध्ययन करते समय समाज को मार्गदर्शन करनेवाले कबीर के विद्रोही विचारों, भावों ने मुझे आकर्षित किया। इसी लिए मैंने अपने लघु शोध - प्रबंध का विषय 'कबीर में विद्रोही - भाव' पर शोध कार्य करना निश्चित किया। इसी विषय को लेकर मैंने हमारे प्रिय , विद्यार्थियों के प्रिय मार्गदर्शक डॉ. आनंद वास्कर जी से चर्चा की। आपने इस विषय को अनुमति तो दे ही दी, इतना ही नहीं, बल्कि मेरे विचारों को एक सुनिश्चित दिशा में मार्गदर्शन भी किया।

'कबीर में विद्रोही - भाव' इस विषय पर अध्ययन करते समय मेरे मन में कुछ प्रश्न पैदा हुये वे इस प्रकार हैं -

1. कबीर का व्यक्तित्व और कृतित्व किस प्रकार का है ?
2. कबीरकालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियों का पता लगाया जाय, जो समकालीन साहित्य को प्रभावित करती हैं।